24/6/64 रात्रि क्लास :– सरस्वती की है सितार। राधे को है नहीं। राधे को जगदम्बा नहीं कहते। सरस्वती को जगदम्बा भी कहते हैं। उस झूठी गीता से रात हो पड़ती, भगवान जो गीता सुनाते उससे दिन हो जाता। अब ये महावीर–महावीरणियाँ बैठी हैं शिवशक्ति। शक्ति मिलती है सर्वशक्तिवान से। ये हो गए मास्टर सर्वशक्तिवान। वह ही स्वर्ग की स्थापना करती है। ये इनके बच्चे सर्वशक्तिवान। बच्चों का(को) नशा रहता है– हम आत्माएँ श्रीमत पर इस भारत की सर्वोत्तम सेवा कर रही हैं। ये है सबसे श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ प्योर बनाना। अब तुम समझे हो, तुमने जो सेवा की है उसका यह मंदिर बना हुआ है, फिर यह खतम हो जावेगा। तुम बच्चों की बुद्धि में यह नॉलेज फिरती रहती है। भल नॉलेज न भी हो, याद की दौड़ी पहनें तो भी बहुत ऊँच जा सकते हैं। तुम बच्चों को नशा है कि हमारी जैसी नॉलेज कोई मनुष्य में नहीं होती। तुम्हारी है एक सेकेण्ड की बात। मनमनाभव, मद्याजीभव का बड़ा भारी अर्थ है। इन दो अक्षर में सब समा जाता है। अल्फ माना अल्लाह, बे माने रचना। जो भी शास्त्र हैं, सब इन दो अक्षर में समा जाते हैं। गाते तो बहुत हैं। पाण्डव गीता, अष्टावक्र गीता भी है। कुछ भी समझ न सकते। अल्फ है बाप को जानना, फिर रचना शुरू होती है। बाप को याद करते रहें तो सदैव खुशी में रहे। अब तुम पढ़ रहे हो। बाबा को अपनाया और पढ़ना शुरू किया। बाबा कहने से विश्व की बादशाही याद आ जाती है। इस हालत में खुशी में रहना चाहिए। भोलानाथ कितना मीठा, कितना प्यारा है। सेकेण्ड में जीवनमुक्ति मिल जाती है। गुडनाइट